فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَن قَالُوٓا۟ أَخْرِجُوٓا۟ ءَالَ لُوطٍ مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿56﴾

५६. उन की क़ौम का जवाब इस कहने के अलावा दूसरा कुछ न था कि लूत के परिवार वालों को अपने नगर से निकाल दो, यह लोग तो बड़ी पाकी दिखा रहे हैं।

فَأَنجَيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥٓ إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ قَدَّرْنَٰهَا مِنَ ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿57﴾

५७. और हम ने उसे और उसके परिवार को, उसकी पत्नी के सिवाय सब को बचा लिया, इसका अंदाज़ा तो बाक़ी रह जाने वालों में हम लगा चुके थे।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَآءَ مَطَرُ ٱلْمُنذَرِينَ ﴿58﴾

५८. और उन के ऊपर एक (ख़ास तरह की) बारिश कर दी,[1] इसलिए उन डराये गये लोगों पर बुरी बारिश हुई।

قُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَٰمٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ ٱلَّذِينَ ٱصْطَفَىٰٓ ۗ ءَآللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿59﴾

५९. तो आप कह दें कि सारी तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है और उस के चुने हुए बन्दों पर सलाम है, क्या अल्लाह (तआला) बेहतर है या वह जिन्हें ये लोग साझीदार बना रहे हैं।

أَمَّنْ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَنۢبَتْنَا بِهِۦ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ لَكُمْ أَن تُنۢبِتُوا۟ شَجَرَهَآ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿60﴾

६०. (भला बताओ तो) आकाशों को और धरती को किसने पैदा किया? किसने आकाश से बारिश की, फिर उस से हरे-भरे बारौनक़ बाग़ उगाये? इन बाग़ों के पेड़ों को तुम कभी नहीं उगा सकते, क्या अल्लाह के सिवाय दूसरा कोई इबादत के लायक़ भी है? बल्कि ये लोग हट जाते हैं (सीधे रास्ते से)।

أَمَّن جَعَلَ ٱلْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَٰلَهَآ أَنْهَٰرًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَٰسِىَ وَجَعَلَ بَيْنَ ٱلْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿61﴾

६१. क्या वह जिस ने धरती को निवासस्थल (क़रारगाह) बनाया, उस के बीच नदियाँ जारी कर दीं, उस के लिये पहाड़ बनाये और दो समुद्रों के बीच रोक बना दी, क्या अल्लाह के साथ कोई दूसरा इबादत के लायक़ भी है? बल्कि उन में से ज़्यादातर कुछ जानते ही नहीं।

[1] उन पर जो अज़ाब आया, उसकी तफ़सील पहले गुज़र चुकी है कि उन बस्तियों को उन पर पलट दिया गया और उस के बाद उन पर तह पर तह कंकड़-पत्थरों की बारिश हुई।

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿62﴾

६२. बेबस की पुकार को जबकि वह पुकारे कौन क़ुबूल करके तकलीफ़ को दूर कर देता है, और तुम्हें धरती का ख़लीफ़ा बनाता है?[1] क्या अल्लाह (तआला) के साथ दूसरा कोई इबादत के लायक़ है? तुम बहुत कम शिक्षा ग्रहण (हासिल) करते हो।

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿63﴾

६३. कौन है वह जो तुम को थल और जल के अंधेरों में रास्ता दिखाता है और जो अपनी रहमत से पहले ही ख़ुशख़बरी देने वाली हवा चलाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई दूसरा देवता भी है? जिन्हें ये साझी बनाते हैं, उन सब से अल्लाह (तआला) बुलन्द है।

أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿64﴾

६४. कौन है वह जो मख़लूक़ की पहली बार पैदाईश करता है फिर उसे लौटायेगा और जो तुम्हें आकाश और धरती से रिज़्क़ अता कर रहा है, क्या अल्लाह के साथ दूसरा कोई देवता भी है? कह दीजिए कि अगर सच्चे हो तो अपना सुबूत लाओ।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿65﴾

६५. कह दीजिए कि आकाश वालों में से और धरती वालों में से अल्लाह के सिवाय कोई भी ग़ैब (की बातें) नहीं जानता[2] उन्हें तो यह भी

---

[1] यानी एक सम्प्रदाय के बाद दूसरा सम्प्रदाय, एक क़ौम के बाद दूसरी क़ौम और एक जाति के बाद दूसरी जाति पैदा करता है, वर्ना अगर वह सबको एक ही वक़्त में पैदा करता तो धरती भी तंगी की शिकायत करती, तिजारत में भी कठिनाई होती और ये सब एक-दूसरे की टाँग खींचने में ही व्यस्त (मश्गूल) रहते। यानी एक के बाद दूसरे इंसानों को पैदा करना और एक को दूसरे का वारिस बनाना, यह भी उसकी अति कृपा (बड़ी रहमत) है।

[2] यानी जिस तरह ऊपरी विषयों में अल्लाह तआला अकेला (अद्वितीय) है, उसका कोई साझी नहीं उसी प्रकार ग़ैब के इल्म में भी वह अकेला है, उस के सिवाय किसी को भी ग़ैब का इल्म नहीं। नबियों और रसूलों को भी उतना ही इल्म (ज्ञान) होता है जितना अल्लाह तआला वह्यी और ईश्वरीय प्रेरणा (इल्हाम) के ज़रिये उनको बता देता है और जो इल्म किसी के बताने से हासिल हो उस के जानने वाला को ग़ैब का इल्म जानने वाला नहीं कहा जाता। ग़ैब का इल्म तो वह है जो बिना किसी माध्यम के ख़ुद हर एक चीज़ का इल्म रखे, हर हक़ीक़त को जानता हो और छिपी से छिपी चीज़ भी उस के इल्म के दायरे से बाहर न हो। यह विशेषता

मालूम नहीं कि वे कब दोबारा जिन्दा किये जायेंगे।

بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِىْ شَكٍّ مِّنْهَا ۚ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿66﴾

६६. बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म ख़त्म हो चुका है, बल्कि यह उस की तरफ़ से शक में हैं बल्कि यह उस से अंधे हैं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّ اٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا لَمُخْرَجُوْنَ ﴿67﴾

६७. काफ़िरों ने कहा कि क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे और हमारे बाप-दादा भी क्या हम फिर निकाले जायेंगे।

لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿68﴾

६८. हमें और हमारे पूर्वजों (बुजुर्गों) को बहुत पहले से ये वादे दिये जाते रहे हैं। कुछ नहीं, यह तो सिर्फ़ पूर्वजों की काल्पनिक कथायें (ख़्याली अफ़साने) हैं।

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿69﴾

६९. कह दीजिए कि धरती में तनिक चल-फिर कर देखो तो सही कि मुजरिमों का कैसा अंजाम हुआ?

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿70﴾

७०. और आप उन के बारे में फ़िक्रमंद न हों और उनकी साज़िशों से तंग दिल न हों।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿71﴾

७१. और कहते हैं कि यह वादा कब है, अगर सच्चे हो तो बतला दो।

قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿72﴾

७२. जवाब दीजिए कि शायद कुछ वे चीज़ें जिन की तुम जल्दी मचा रहे हो, तुम से बहुत क़रीब हो गई हों।[1]

(ख़ुसूसियत) सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही की है, इसलिए केवल वही छिपी बातों (ग़ैब) का जानने वाला है, उस के सिवाय पूरी दुनिया में कोई भी छिपी बातों (ग़ैब) का जानने वाला नहीं है। हज़रत आयेशा (رضی الله عنها) फ़रमाती हैं कि जो इंसान यह ख़्याल रखता है कि नबी ﷺ भविष्य (मुस्तक़्बिल) में होने वाले वाक़ेआ (घटनाओं) का इल्म रखते हैं, उस ने अल्लाह पर बहुत बड़ा बुहतान लगाया, इसलिए कि वह फ़रमा रहा है कि "आकाश और धरती में ग़ैब (छिपी बातों) का इल्म केवल अल्लाह को है।" (सहीह बुख़ारी, नं॰ ४८५५, सहीह मुस्लिम नं॰ २८७, और अल-तिर्मिज़ी नं॰ ३०६८)

[1] इस से मुराद बद्र की लड़ाई का वह अज़ाब है, जो क़त्ल और क़ैद किये जाने के रूप में

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿73﴾

७३. और बेशक आप का रब सभी लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल (कृपा) वाला है, लेकिन ज़्यादातर लोग शुक्रिया अदा नहीं करते हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿74﴾

७४. और बेशक आप का रब उन बातों को भी जानता है जिन्हें वे अपने दिल में छिपा रहे हैं और जिन्हें जाहिर कर रहे हैं।

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿75﴾

७५. आकाश और धरती की कोई छिपी चीज भी ऐसी नहीं है जो रौशन खुली किताब में न हो।[1]

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿76﴾

७६. बेशक यह क़ुरआन इस्राईल की औलाद के सामने ज़्यादातर उन बातों का बयान कर रहा है जिन में ये इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करते हैं।[2]

وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿77﴾

७७. और यह (क़ुरआन) ईमानवालों के लिए बेशक हिदायत और रहमत है।

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿78﴾

७८. आप का रब उन के बीच अपने हुक्म से (सभी) फ़ैसला कर देगा, वह बड़ा प्रभावशाली (ग़ालिब) और जानने वाला है।

काफ़िरों को पहुँचा और क़ब्र का अज़ाब है।

[1] इस से मुराद 'लौहे महफ़ूज़' (सुरक्षित पुस्तक) है। उन ही छिपी चीज़ों में उस अज़ाब का इल्म भी है जिस के लिए यह काफ़िर लोग जल्दी मचाते हैं, लेकिन उसका समय भी अल्लाह ने 'लौहे महफ़ूज़' में लिख रखा है, जिसे केवल वही जानता है और जब वह वक़्त आ जाता है जो उस ने किसी क़ौम की तबाही के लिए लिख रखा है तो फिर उसे नाश कर दिया जाता है, यह मुक़र्रर वक़्त के आने से पहले जल्दी क्यों करते हैं?

[2] अहले किताब यानी यहूदी और इसाई कई सम्प्रदायों और गुटों में बट गये थे, उन के विश्वास (ख़्याल) भी एक-दूसरे से अलग थे। यहूदी हज़रत ईसा का निरादर (ज़लील) और अपमान (बेइज़्ज़त) करते थे और इसाई उन के एहतेराम में ग़ुलू (अतिश्योक्ति), यहाँ तक कि उन्हें अल्लाह या अल्लाह का बेटा बना दिया। क़ुरआन करीम ने उन्ही के बारे में ऐसी बातें बयान की हैं, जिन से सच वाज़ेह हो जाता है और अगर वे क़ुरआन की बयान की हुई सच्चाई को क़ुबूल कर लें तो उनका अक़ीदा से सम्बन्धित विरोध का ख़ात्मा और उन के इख़्तिलाफ़ और फूट में कमी हो जाये।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۖ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿79﴾

७९. इसलिए आप अल्लाह पर ही भरोसा रखें, बेशक आप सच और खुले दीन पर हैं।

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿80﴾

८०. बेशक आप न मुर्दों को सुना सकते हैं और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हैं[1] जब कि वे पीठ फेर कर मुंह मोड़े जा रहे हों।

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۖ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿81﴾

८१. और न आप अंधों को उन की गुमराही से हटाकर हिदायत दे सकते हैं, आप तो सिर्फ़ उन्हें सुना सकते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाये हैं फिर वे फ़रमांबर्दार हो जाते हैं।

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿82﴾

८२. और जब उन के उपर अज़ाब का वादा साबित हो जायेगा, हम धरती से उन के लिए एक जानवर निकालेंगे जो उन से बातें करता होगा[2] कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं करते थे।[3]

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿83﴾

८३. और जिस दिन हम हर उम्मत में से उन लोगों के गुटों को जो हमारी आयतों को झुठलाते थे घेर-घार कर लायेंगे फिर वे सब

---

[1] यह उन काफ़िरों की फ़िक्र न करने और सिर्फ़ अल्लाह पर भरोसा न रखने की दूसरी वजह है, कि ये लोग मुर्दे हैं जो किसी की बात को सुन कर फ़ायेदा नहीं उठा सकते या बहरे हैं, जो न सुनते हैं न समझते हैं और न रास्ता पाने वाले हैं, यानी काफ़िरों की मिसाल मरे हुए इंसान से दी जिन में संवेदन (शऊर) नहीं होता है न अक़्ल और बहरों से, जो बात और नसीहत सुनते हैं न अल्लाह की तरफ़ दावत को क़ुबूल करते हैं।

[2] यह दाब्ब: (अजीब जानवर) वही है जो क़यामत के क़रीब होने की निशानी में से है, जैसाकि हदीस में है। नबी ﷺ ने फ़रमाया : "क़यामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक तुम दस निशानियाँ न देख लो उन में एक जानवर का निकलना है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाबु फ़ी आयातिल-लती तकूनु क़ब्लस्साअह) दूसरा क़ौल है, "सब से पहले जो निशानी ज़ाहिर होगी वह है सूरज का पूरब के बजाय पश्चिम से निकलना और दोपहर से पहले जानवर का निकलना।" इन दोनों में से जो पहले ज़ाहिर होगा दूसरा उस के फ़ौरन बाद ही ज़ाहिर हो जायेगा। (सहीह मुस्लिम)

[3] यह जानवर के निकलने की वजह है, यानी अल्लाह तआला अपनी यह निशानी इसलिए दिखायेगा कि लोग अल्लाह की निशानियों या आयतों (आदेशों) पर यक़ीन नहीं करते। कुछ कहते हैं कि यह वाक्य (कलाम) वह जानवर अपने मुंह से कहेगा, फिर भी उस जानवर के इंसानों से बात करने में कोई शक नहीं क्योंकि क़ुरआन ने इसको साफ़ तौर से कहा है।

के सब अलग कर दिये जायेंगे।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿84﴾

८४. जब सब के सब आ पहुँचेंगे तो अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा कि तुम ने मेरी आयतों को इस के बावजूद कि तुम्हें उन का पूरा इल्म न था, क्यों झुठलाया? और यह भी बताओ कि तुम क्या कुछ करते रहे?

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿85﴾

८५. और इसकी वजह कि उन्होंने ज़ुल्म किया था, उन पर बात साबित हो जायेगी और वे कुछ न बोल सकेंगे।

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿86﴾

८६. क्या वे देख नहीं रहे हैं कि हम ने रात को इसलिए बनाया है कि वे इस में आराम कर सकें और दिन को हम ने दिखलाने वाला बनाया है, बेशक इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान (और विश्वास) रखते हैं।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ۭ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿87﴾

८७. और जिस दिन नरसिंघा (सूर) फूंका जायेगा तो सब के सब आकाशों वाले और धरती वाले घबरा उठेंगे[1] लेकिन जिसे अल्लाह चाहे।[2] और सारे के सारे आजिज (और मजबूर) होकर उस के सामने हाज़िर होंगे।

[1] صور से मुराद वही नरसिंघा है जिस में इस्राफ़ील ﷺ अल्लाह के हुक्म से फूंक मारेंगे, यह फूंक दो या दो से ज़्यादा होंगी। पहली फूंक में सारी दुनिया घबराकर बेहोश हो जायेगी, दूसरी फूंक में मर जायेगी और तीसरी फूंक में सभी लोग क़ब्रों से जिन्दा होकर खड़े हो जायेंगे और कुछ के क़रीब चौथी फूंक होगी जिस से सभी लोग हश्र के मैदान में जमा हो जायेंगे। यहाँ कौन सी फूंक मुराद है? इमाम इब्ने कसीर के क़रीब यह पहली फूंक और इमाम शौकानी के क़रीब तीसरी फूंक है जब लोग क़ब्रों से उठेंगे।

[2] यह छूट हासिल करने वाले लोग कौन होंगे? कुछ के क़रीब नबी और शहीद, कुछ के क़रीब फ़रिश्ते और कुछ के क़रीब सभी ईमानवाले हैं। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि शायद सभी बयान किये गये लोग इस में शामिल हों, क्योंकि ईमानवाले वास्तविक (हक़ीक़ी) घबराहट से महफ़ूज होंगे। (जैसाकि आ रहा है)

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ اِنَّهٗ خَبِيْرٌ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿88﴾

८८. और आप पहाड़ों को अपनी जगह पर जमा हुआ समझते हैं लेकिन वे भी बादल (मेघ) की तरह उड़ते फिरेंगे। यह है पैदाईश अल्लाह की जिस ने हर चीज को मजबूत बनाया है, जो कुछ तुम करते हो उस से वह अच्छी तरह जानता है।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿89﴾

८९. जो इंसान नेकी के काम लायेगा उसे उस से भी अच्छा बदला मिलेगा, और वह उस दिन की घबराहट से बेख़ौफ़ होंगे।

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿90﴾

९०. और जो बुराई लेकर आयेंगे वे औंधे मुंह आग में झोंक दिये जायेंगे, केवल वहाँ बदला दिये जाओगे जो तुम करते रहे।

اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۫ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿91﴾

९१. मुझे तो केवल यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस नगर के रब की इबादत करता रहूँ जिसने इसे हुरमत (पवित्रता) वाला बनाया है[1] जिसकी मिल्कियत हर चीज है और मुझे यह भी हुक्म दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों (फ़रमाँबरदारों) में हो जाऊँ।

وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿92﴾

९२. और मैं कुरआन की तिलावत करता रहूँ, तो जो हिदायत पर आ जाये वह अपने फ़ायदे के लिए हिदायत पर आयेगा, और जो भटक जाये तो कह दीजिए कि मैं तो केवल सतर्क (आगाह) करने वालों में से हूँ।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿93﴾

९३. और कह दीजिए कि सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, वह तुम्हें क़रीब में ही अपनी निशानियाँ दिखायेगा जिन्हें तुम ख़ुद पहचान लोगे, और जो कुछ तुम कर रहे हो उस से आप का रब ग़ाफ़िल नहीं।

---

[1] इस से मुराद मक्का नगर है, इसका ख़ास तौर से बयान इसलिए किया गया है कि इस में ख़ानये कअबा है और यही रसूलुल्लाह ﷺ को भी बहुत प्यारा था। "हुरमत वाला" का मतलब है कि इस में ख़ून-ख़राबा करना, जुल्म करना, शिकार करना, पेड़ काटना, यहाँ तक कि काँटा तोड़ना भी हराम है। (बुख़ारी, किताबुल जनायेज, मुस्लिम किताबुल हज बाबु तहरीमे मक्का व सैदहा, व अलसुनन)

سُوْرَةُ الْقَصَصِ

सूरतुल-क़सस-२८

सूरः क़सस* मक्का में नाज़िल हुई और इस में अट्ठासी आयतें और नौ रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

طٰسٓمّٓ ﴿1﴾

१. ता॰ सीम॰ मीम॰

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿2﴾

२. ये आयतें हैं रौशन वाली किताब की।

نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿3﴾

३. हम आप के सामने मूसा और फ़िरऔन का सच्चा वाक़ेआ बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْىٖ نِسَآءَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿4﴾

४. बेशक फ़िरऔन ने धरती पर फ़साद मचा रखा था, और वहां के लोगों का गुट बना रखा था, उन के एक गुट को कमज़ोर (दुर्बल) बना रखा था,[1] उन के बालकों को तो मार डालता था और लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ देता था। बेशक वह था ही फ़सादियों में से।

وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿5﴾

५. और फिर हम ने चाहा कि उन पर दया करें जिन्हें धरती पर बेहद कमज़ोर (दुर्बल) कर दिया गया था और हम उन्हें ही प्रमुख और (धरती) का वारिस बनायें।

---

* **सूरः अल-क़सस की तफ़सीर** :यह वाक़ेआ इस बात का सुबूत है कि आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हैं, क्योंकि अल्लाह की वह्यी के बिना सदियों पहले के वाक़ेओं को ठीक उसी तरह से बयान कर देना जिस तरह हुआ नामुमकिन है। फिर भी उस के बावजूद इस से फ़ायेदा केवल ईमानवालों ही को होगा, क्योंकि वही आप की बातों को मानेंगे।

[1] इस से मुराद इस्राईल की औलाद है जो उस वक़्त की सब से अच्छी उम्मत थी, लेकिन इम्तेहान के रूप में फ़िरऔन की ग़ुलामी और उस के ज़ुल्म और सख़्ती का निशान बनी हुई थी।

६. और यह भी कि उन्हें धरती पर ताक़त और इख़्तेयार अता करें[1] और फ़िरऔन और हामान और उन की सेनाओं को वह दिखायें जिस से वे डर रहे हैं।

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُم مَّا كَانُوا يَحْذَرُونَ ⑥

७. और हम ने मूसा की माँ को वह्यी (प्रकाशना) की [2] कि उसे दूध पिलाती रह और जब तुझे उस के बारे में कोई डर महसूस हो तो उसे नदी में बहा देना, और कोई डर, ग़म और दुख न करना। हम बेशक उसे तेरी तरफ़ लौटाने वाले हैं और उसे अपने पैग़म्बरों में से बनाने वाले हैं।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۖ إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ⑦

८. आख़िर में फ़िरऔन के लोगों ने उस बालक को उठा लिया[3] कि आख़िरकार यही बालक उन का दुश्मन हुआ और उन के दुखों का सबब बना, कोई शक नहीं कि फ़िरऔन और हामान और उन की सेना थे ही अपराधी।

فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۗ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِئِينَ ⑧

९. और फ़िरऔन की बीवी (पत्नी) ने कहा कि यह तो मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है, इस को क़त्ल न करो[4] ज़्यादा मुमकिन है कि यह हमें कोई फ़ायेदा पहुँचाये या हम इसे अपना ही

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّي وَلَكَ ۖ لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰ أَن يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑨

[1] यहाँ धरती से मुराद सीरिया की धरती है, जहाँ वे कनआनियों की धरती के वारिस बने, क्योंकि मिस्र से निकलने के बाद इस्राईल की औलाद मिस्र वापस नहीं गयी। والله أعلم

[2] वह्यी से मुराद यहाँ दिल में बात डालना है, वह वह्यी नहीं है जो नबियों पर फ़रिश्ते के ज़रिये नाज़िल की जाती थी, और अगर फ़रिश्ते के ज़रिये भी आयी हो तब भी मूसा की माँ का नबी होना साबित नहीं होता, क्योंकि फ़रिश्ते कई बार आम लोगों के पास भी आते हैं। जैसे हदीस में गंजे, कोढ़ी और अंधे के पास फ़रिश्तों का आना साबित है। (सहीह बुख़ारी, किताबु अहादीसिल अंबिया)

[3] यह सन्दूक बहता-बहता फ़िरऔन के राजमहल तक पहुँच गया जो नदी के तट ही पर था और वहाँ फ़िरऔन के कर्मचारियों ने पकड़ कर बाहर निकाला।

[4] यह उस वक़्त कहा जब उन्होंने सन्दूक में एक ख़ूबसूरत बच्चा देखा। कुछ कहते हैं कि यह उस वक़्त का क़ौल है जब मूसा ने फ़िरऔन की दाढ़ी के बाल नोच लिये थे तो फ़िरऔन ने उन को क़त्ल करने का हुक्म दे दिया था। (ऐसरूत्तफ़ासीर) बहुवचन (जमा) का शब्द (लफ़्ज) या तो अकेले फ़िरऔन के लिए ऐहतराम के तौर पर कहा गया है या मुमकिन है कि वहाँ उस के कुछ दरबारी मौजूद रहे हों।

बेटा बना लें और यह लोग अक़्ल ही नहीं रखते थे।

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَارِغًا ۖ إِن كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ لَوْلَا أَن رَّبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿10﴾

१०. और मूसा (عليه السلام) की माँ का दिल बेचैन हो गया, क़रीब था कि इस (हक़ीक़त) को बिल्कुल साफ़ (स्पष्ट) कर देतीं अगर हम उन के दिल को ढारस न देते, यह इस लिए कि वह यक़ीन करने वालों में रहे।[1]

وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصُرَتْ بِهِ عَن جُنُبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿11﴾

११. मूसा (عليه السلام) की माँ ने उस की बहन[2] से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा, तो वह उसे दूर ही दूर से देखती रही[3] और फ़िरऔनियों को इसका एहसास भी न हुआ।

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِن قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَاصِحُونَ ﴿12﴾

१२. और उस के पहुँचने से पहले हम ने मूसा पर दाईयों का दूध हराम (निषेध) कर दिया था,[4] यह कहने लगी कि क्या मैं तुम्हें [5] ऐसा परिवार बताऊँ जो इस बच्चे का पालन-पोषण (परवरिश) तुम्हारे लिए करें और हों भी इस बच्चे के शुभचिन्तक (ख़ैरख़्वाह)।

---

[1] यानी बहुत दुख की वजह से यह ज़ाहिर कर देतीं कि यह उनका पुत्र है, लेकिन अल्लाह (तआला) ने उन के दिल को मज़बूत कर दिया, जिस पर उन्होंने सब्र किया और यक़ीन कर लिया कि अल्लाह ने इस मूसा को सकुशल (ख़ैरियत से) वापस लौटाने का जो वादा दिया है वह पूरा होगा।

[2] मूसा की बहन का नाम मरियम बिन्ते इमरान था, जिस तरह हज़रत ईसा की माँ का नाम मरियम बिन्ते इमरान था, नाम और पिता के नाम दोनों में बराबर थी।

[3] इसलिए वह नदी के किनारे-किनारे देखती रही यहाँ तक कि उसने देख लिया कि उसका भाई फ़िरऔन के महल में चला गया है।

[4] यानी हम ने अपनी ताक़त और क़ुदरत के ज़रिये मूसा को अपनी माँ के सिवाय किसी दूसरी दाया का दूध पीने से रोक दिया, इसलिए बहुत कोशिश के बावजूद कोई दाया उन्हें दूध पिलाने और ख़ामोश करने में कामयाब नहीं हो सकी।

[5] यह सारा नज़ारा उनकी बहन ख़ामोशी से देख रही थीं, आख़िर में बोल पड़ीं कि मैं तुम्हें ऐसा परिवार बताऊँ जो इस बच्चे का तुम्हारे लिए पालन-पोषण (परवरिश) करे।

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿13﴾

१३. तो हम ने उसे उस की माँ की तरफ़ वापस पहुँचा दिया,[1] ताकि उस की आँखें ठंडी रहें और दुखी न हो और जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है,[2] लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿14﴾

१४. और जब मूसा (ﷺ) अपनी जवानी को पहुँच गये और पूरे ताक़तवर हो गये, हम ने उन्हें हिक्मत (बुद्धि) और इल्म अता किया, नेकी करने वालों को हम इसी तरह का बदला दिया करते हैं।

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰي حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ڭ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَي الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ڭ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿15﴾

१५. और (मूसा) एक ऐसे वक़्त में नगर में आये जबकि नगर के लोग सोये हुए थे। यहाँ दो इंसानों को लड़ते हुए पाया, यह एक तो उस के गुटों में से था और यह दूसरा उस के दुश्मनों में से, उस की जमाअत वाले ने उस के ख़िलाफ़ जो उस के दुश्मनों में से था उस से मदद माँगी, जिस पर मूसा ने उसे घूँसा मारा जिस से वह मर गया, मूसा कहने लगे कि यह तो शैतानी काम है ।[3] बेशक शैतान दुश्मन और खुले तौर से बहकाने वाला है।

---

[1] इसलिए उन्होंने मूसा की बहन से कहा कि जा उस औरत को ले आ, वह दौड़ी-दौड़ी गयी और अपनी माँ को, जो मूसा की भी माँ थीं साथ ले आयी।

[2] जब हज़रत मूसा ने अपनी माँ का दूध पी लिया तो फ़िरऔन ने मूसा की माँ से महल में रहने की गुज़ारिश की ताकि बच्चे का अच्छी तरह से परवरिश हो सके, लेकिन उन्होंने कहा कि मैं अपने पति और बच्चों को छोड़कर यहाँ नहीं रह सकती, आख़िर में यह तय हुआ कि वह अपने साथ बच्चे को अपने घर ले जायें और वहीं इसका परवरिश करें और इसकी उजरत (पारिश्रामिक) उन्हें राज्य ख़ज़ाने से दी जायेगी। अल्लाह की ही सारी तारीफ़ें हैं, अल्लाह की क़ुदरत का क्या कहना, दूध अपने पुत्र को पिलायें और वेतन फ़िरऔन से हासिल करें, अल्लाह ने मूसा को वापस लौटाने का वादा किस अच्छे तरीक़े से पूरा कर दिखाया।

[3] इसे शैतानी (दानव का) काम इसलिए कहा गया है कि क़त्ल एक बहुत बड़ा गुनाह है, और हज़रत मूसा का मक़सद कभी क़त्ल करने का नहीं था।

१६. फिर वह दुआ करने लगे कि हे रब ! मैंने तो ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया, तू मुझे माफ़ कर दे[1] अल्लाह (तआला) ने उसे माफ़ कर दिया, वेशक वह माफ़ करने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿16﴾

१७. कहने लगे हे मेरे रव ! जैसे तूने मुझ पर यह नेमत की, मैं भी अब किसी मुजरिम का मददगार न बनूँगा।

قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ﴿17﴾

१८. फिर सुबह ही सुबह डरते हुए ख़बर लेने को नगर में गये कि अचानक वही इंसान जिस ने कल उन से मदद माँगी थी उन से विनती कर रहा है। मूसा ने उस से कहा कि इस में शक नहीं कि तू तो ख़ुले तौर से गुमराह है।

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ ۚ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُبِينٌ ﴿18﴾

१९. फिर जब अपने और उस के दुश्मन को पकड़ना चाहा, वह फ़र्यादी कहने लगा कि हे मूसा! क्या जिस तरह तूने कल एक इंसान को क़त्ल कर दिया है मुझे भी मार डालना चाहता है, तू तो देश में ज़ालिम और फ़सादी बनना ही चाहता है और तेरा यह इरादा ही नहीं कि सुलह करने वालों में से हो।

فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَهُمَا قَالَ يَا مُوسَىٰ أَتُرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ ۖ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ﴿19﴾

२०. और नगर के दूर के किनारे से दौड़ता हुआ एक इंसान आया[2] और कहने लगा कि हे मूसा! यहाँ के मुखिया तेरे क़त्ल का परामर्श (मश्विरा) कर रहे हैं, इसलिए तू (बहुत जल्द)

وَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَقْصَى الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ﴿20﴾

---

[1] यह अचानक क़त्ल अगरचे बहुत वड़ा गुनाह नहीं था, क्योंकि बहुत बड़े गुनाह से अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर को महफ़ूज़ रखता है। फिर भी यह ऐसा गुनाह हर तरह से था जिस के लिये बहुत माफ़ी माँगना उन्होंने ज़रूरी समझा। दूसरे उन्हें डर था कि अगर फ़िरऔन को इसकी ख़बर मिली तो इस के वदले उन का क़त्ल न कर दे।

[2] यह आदमी कौन था? कुछ के क़रीब यह फ़िरऔन के वंश से था जो छिपे तौर से हज़रत मूसा का शुभचिन्तक (ख़ैरख़्वाह) था, और साफ़ बात है कि सरदारों के ख़्यालों की ख़बर ऐसे ही आदमी से आना ज़्यादा अनुमानित (मुनासिब) वात है, कुछ के क़रीब यह हज़रत मूसा का रिश्तेदार और इस्राईली था। दूर के किनारे से मुराद मुन्फ़ है जहाँ फ़िरऔन का महल और राजधानी थी और यह नगर के आख़िरी सिरे पर था।

चला जा, मुझे अपना शुभचिन्तक (ख़ैरख़्वाह) मान।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَتَرَقَّبُ ۖ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿21﴾

२१. इसलिए मूसा वहाँ से डर कर बचते-बचाते निकल भागे, कहने लगे हे रब! मुझे ज़ालिमों के गुट से बचा ले।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿22﴾

२२. और जब 'मदयन' की तरफ़ जाने लगे तो कहने लगे कि मुझे यक़ीन है कि मेरा रब मुझे सीधा रास्ता ले चलेगा।

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۬ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۖ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٚ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿23﴾

२३. और 'मदयन' के पानी पर जब आप पहुँचे तो देखा कि लोगों का एक समूह वहाँ पानी पिला रहा है[1] और दो महिलायें (औरतें) अलग खड़ी (अपने जानवरों को) रोकती हुई दिखाई दीं, पूछा कि तुम्हारा क्या मसला है, वे बोलीं कि जब तक ये चरवाहे वापस न लौट जायें हम पानी नहीं पिलाते और हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿24﴾

२४. इसलिए आप ने ख़ुद उन (जानवरों) को पानी पिला दिया फिर छाया की तरफ़ हट आये और कहने लगे हे रब! तू जो कुछ भलाई मेरी तरफ़ उतारे मैं उस का मुहताज हूँ।[2]

---

[1] यानी जब मदयन पहुँचे तो देखा कि उस के घाट (कुएँ) पर लोगों की भीड़ है, जो अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं। मदयन यह क़बीले (प्रजाति) का नाम था और हज़रत इब्राहीम की औलाद में से था, जब कि हज़रत मूसा याक़ूब के ख़ानदान से थे जो हज़रत इब्राहीम के पोते (हज़रत इसहाक़ के बेटे) थे। इस तरह मदयनवासियों और मूसा के बीच ख़ानदानी सम्बन्ध भी था। (ऐसरूत्तफ़ासीर) और यही हज़रत शुऐब का निवास स्थान (मक़ाम) और नबूअत (दूतत्व) का इलाक़ा भी था।

[2] हज़रत मूसा इतनी लम्बी यात्रा (सफ़र) करके मिस्र से मदयन पहुँचे थे, खाने के लिए कुछ नहीं था जबकि यात्रा की थकान और भूख से निढाल थे। अत: जानवरों को पानी पिलाकर एक पेड़ की छाया में आकर दुआ करने लगे। خير कई बातों के लिए इस्तेमाल किया जाता है, खाने के लिये, अच्छे कामों के लिये, इबादत के लिये, ताक़त, बल और माल के लिये। (ऐसरूत्तफ़ासीर) यहाँ इसका इस्तेमाल खाने के लिये हुआ है, यानी मुझे इस वक़्त खाने की ज़रूरत है।

२५. इतने में उन दोनों औरतों में से एक उन की तरफ़ शर्म के साथ चलती हुई आयी और कहने लगी कि मेरे पिता आप को बुला रहे हैं ताकि आप ने जो हमारे (जानवरों) को पानी पिलाया है उस की उजरत दें, जब (हज़रत मूसा) उन के पास पहुँचे और उन से अपनी सारी कहानी सुनाई तो वह कहने लगे कि अब न डर, तूने ज़ालिम (अत्याचारी) क़ौम से छुटकारा पा लिया।

فَجَآءَتۡهُ اِحۡدٰىهُمَا تَمۡشِىۡ عَلَى اسۡتِحۡيَآءٍ قَالَتۡ اِنَّ اَبِىۡ يَدۡعُوۡكَ لِيَجۡزِيَكَ اَجۡرَ مَا سَقَيۡتَ لَنَا ‌ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيۡهِ الۡقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفۡ ٝ نَجَوۡتَ مِنَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ‏(25)

२६. उन दोनों में से एक ने कहा कि हे पिताजी! आप इन्हें मज़दूरी पर रख लीजिए क्योंकि जिन्हें आप मज़दूरी पर रखें उन में से सब से अच्छा वह है जो बलवान (ताक़तवर) और ईमानदार हो।

قَالَتۡ اِحۡدٰىهُمَا يٰۤاَبَتِ اسۡتَاۡجِرۡهُ‌ ۖ اِنَّ خَيۡرَ مَنِ اسۡتَاۡجَرۡتَ الۡقَوِىُّ الۡاَمِيۡنُ‏ (26)

२७. उस (बूढ़े) ने कहा कि मैं अपनी इन दो बेटियों में से एक को आप के विवाह में देना चाहता हूँ, इस [महर (स्त्रीधन)] पर कि आप आठ साल तक मेरा काम-काज करें। हाँ अगर आप दस साल तक करें तो यह आप की तरफ़ से एहसान के तौर पर है, मैं कभी यह नहीं चाहता कि आप पर किसी तरह का कष्ट डालूँ। अल्लाह को क़ुबूल हुआ तो आगे चलकर आप मुझे भला इंसान पायेंगे।

قَالَ اِنِّىۡۤ اُرِيۡدُ اَنۡ اُنۡكِحَكَ اِحۡدَى ابۡنَتَىَّ هٰتَيۡنِ عَلٰٓى اَنۡ تَاۡجُرَنِىۡ ثَمٰنِىَ حِجَجٍ‌ ۚ فَاِنۡ اَتۡمَمۡتَ عَشۡرًا فَمِنۡ عِنۡدِكَ‌ ۚ وَمَاۤ اُرِيۡدُ اَنۡ اَشُقَّ عَلَيۡكَ‌ ؕ سَتَجِدُنِىۡۤ اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيۡنَ‏ (27)

२८. (मूसा ﷺ ने) कहा कि ठीक है यह बात तो मेरे और आप के बीच मुक़र्रर (निर्धारित) हो गयी, मैं इन दोनों मुद्दतों में से जिसे पूरा कर लूँ मुझ पर ज़ुल्म न हो। हम यह जो कुछ कह रहे हैं उस पर अल्लाह (गवाह और) निगराँ है।

قَالَ ذٰلِكَ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَكَ‌ ؕ اَيَّمَا الۡاَجَلَيۡنِ قَضَيۡتُ فَلَا عُدۡوَانَ عَلَىَّ‌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوۡلُ وَكِيۡلٌ ‏(28)

फ़लम्मा क़ज़ा मूसल अजल व सार बिअहलिही

فَلَمَّا قَضٰی مُوْسَی الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّیْۤ اٰتِیْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿29﴾

२९. जब (हज़रत) मूसा (ﷺ) ने मुद्दत पूरी कर ली और अपने परिवार वालों को लेकर चले तो 'तूर' नाम के पहाड़ की तरफ़ आग देखी, अपनी पत्नी से कहने लगे, ठहरो ! मैंने आग देखी है, ज़्यादा मुमकिन है कि मैं वहाँ से कोई ख़बर लाऊँ या आग का कोई अँगारा लाऊँ ताकि तुम ताप लो ।

فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِیَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَیْمَنِ فِی الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ یّٰمُوْسٰۤی اِنِّیْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿30﴾

३०. इसलिए जब वहाँ पहुँचे तो उस मुबारक धरती के मैदान के दायें किनारे के पेड़ में से आवाज़ दी गयी कि हे मूसा! बेशक मैं ही अल्लाह हूँ सारी दुनिया का रब ।

وَ اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰی مُدْبِرًا وَّلَمْ یُعَقِّبْ ؕ یٰمُوْسٰۤی اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِیْنَ ﴿31﴾

३१. और यह (भी आवाज़ आयी) कि अपनी छड़ी डाल दे, फिर जब उसे देखा कि वह साँप की तरह फनफना रही है, तो पीठ फेर कर वापस हो लिये और मुड़कर मुँह भी नहीं किया, हम ने कहा कि हे मूसा ! आगे आ भयभीत (ख़ौफ़ज़दा) न हो, बेशक तू हर तरह से शान्ति वाला (सुरक्षित) है ।[1]

اُسْلُكْ یَدَكَ فِیْ جَیْبِكَ تَخْرُجْ بَیْضَآءَ مِنْ غَیْرِ سُوْٓءٍ ؗ وَّاضْمُمْ اِلَیْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰی فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِیْنَ ﴿32﴾

३२. अपने हाथ को अपनी जेब में डाल वह बिना किसी प्रकार के दाग़ के पूरा सफ़ेद चमकता हुआ निकलेगा, और डर से बचने के लिए अपनी बाँह अपनी तरफ़ मिला ले । बस ये दोनों मोजिज़े तेरे रब की तरफ़ से हैं फ़िरऔन

---

[1] यह मूसा (ﷺ) का वह मोजिज़ा है जो तूर पहाड़ पर नबूअत से सुशोभित (सरफ़राज़) किये जाने के बाद उन्हें मिला, चूँकि मोजिज़ा आदत (व्यवहार) के ख़िलाफ़ मामले को कहा जाता है यानी जो सामान्य (आम) आदत और ज़ाहिरी असबाब (साधनों) के ख़िलाफ़ हो, ऐसी बात चूँकि अल्लाह के हुक्म और मर्ज़ी से ज़ाहिर होती है किसी इंसान की ताक़त से नहीं चाहे वह बुज़ुर्ग पैग़म्बर और निकटवर्ती (मुक़र्रब) नबी ही क्यों न हो । इसलिए जब मूसा के अपने हाथ की लाठी धरती पर फेंकने से चलती, दौड़ती और फुँकारती साँप बन गई तो हज़रत मूसा भी डर गये, जब अल्लाह ने बताया और तसल्ली दी तो हज़रत मूसा का डर ख़त्म हुआ और यह वाज़ेह हुआ कि अल्लाह तआला ने सच्चाई के सबूत के तौर पर यह मोजिज़ा उन्हें अता किया है ।

और उस के गुट की तरफ़, बेशक वे सब के सब नाफ़रमानी करने वाले नाफ़रमान लोग हैं।

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿33﴾

३३. (मूसा ﷺ ने) कहा कि हे रब ! मैंने उनका एक आदमी मार दिया था, अब मुझे डर है कि वे मुझे भी मार डालेंगे।

وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿34﴾

३४. और मेरा भाई हारून मुझ से ज़्यादा साफ़ ज़बान वाला है, तू उसे भी मेरा सहायक (मददगार) बनाकर मेरे साथ भेज कि वह मुझे सच्चा माने, मुझे तो डर है कि वे सब मुझे झुठला देंगे।

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا ۚ بِآيَاتِنَا أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ﴿35﴾

३५. (अल्लाह तआला ने) कहा कि हम तेरे भाई के ज़रिये तुझे मज़बूत बाज़ू अता करेंगे और तुम दोनों को प्रभावशाली (ग़ालिब) करेंगे तो फ़िरऔनी तुम तक पहुँच ही न सकेंगे। हमारी निशानियों के सबब तुम दोनों और तुम्हारे पैरोकार ही कामयाब रहेंगे।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُفْتَرًى وَمَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿36﴾

३६. इसलिए जब उन के पास मूसा (ﷺ) हमारे दिये हुए खुले मोजिज़े लेकर पहुँचे तो वे कहने लगे कि यह तो केवल गढ़ा-गढ़ाया जादू है, हम ने अपने पहलों के ज़माने में कभी यह नहीं सुना।

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿37﴾

३७. और (हज़रत) मूसा कहने लगे मेरा रब उसे अच्छी तरह जानता है जो उस के पास की हिदायत लेकर आता है, और जिस के लिए आख़िरत का अच्छा अंजाम (परिणाम) होता है।[1] बेशक ज़ालिमों का भला न होगा।

[1] अच्छे अंजाम (परिणाम) से मुराद आख़िरत में अल्लाह की ख़ुशी और उस की माफ़ी और रहमत के मुस्तहिक़ हो जाना है, और यह सौभाग्य (ख़ुशनसीबी) केवल एकेश्वरवादियों (तौहीद वालों) के हिस्से में आयेगा।

३८. और फ़िरऔन कहने लगा कि हे दरबारियो! मैं तो अपने सिवाय किसी को तुम्हारा माबूद नहीं जानता। सुन, हे हामान ! तू मेरे लिए मिट्टी को आग में पकवा, फिर मेरे लिए एक महल तैयार कर तो मैं मूसा के इलाह (देवता) को झाँक लूँ, उसे मैं तो झूठों में से ही समझ रहा हूँ।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَٰٓأَيُّهَا ٱلْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرِى ۚ فَأَوْقِدْ لِى يَٰهَٰمَٰنُ عَلَى ٱلطِّينِ فَٱجْعَل لِّى صَرْحًا لَّعَلِّىٓ أَطَّلِعُ إِلَىٰٓ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّى لَأَظُنُّهُۥ مِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿38﴾

३९. उस ने और उस की सेना ने नाहक़ देश में घमण्ड किया,[1] और समझ लिया कि हमारी तरफ़ लौटाये ही नही जायेंगे।

وَٱسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُۥ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ وَظَنُّوٓا۟ أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ﴿39﴾

४०. आख़िर में हम ने उसे और उस की सेना को पकड़ लिया और समुद्र में डूबो दिया, अब देख ले कि उन ज़ालिमों का अंजाम कैसा कुछ हुआ?

فَأَخَذْنَٰهُ وَجُنُودَهُۥ فَنَبَذْنَٰهُمْ فِى ٱلْيَمِّ ۖ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿40﴾

४१. और हम ने उन्हें ऐसे अगुवा बना दिये कि लोगों को नरक की ओर बुलायें और क़यामत के दिन भी मदद न किये जायें।

وَجَعَلْنَٰهُمْ أَئِمَّةً يَدْعُونَ إِلَى ٱلنَّارِ ۖ وَيَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ لَا يُنصَرُونَ ﴿41﴾

४२. और हम ने इस दुनिया में भी उन के पीछे अपनी लानत लगा दिया, और क़यामत के दिन भी वह बुरी हालत वाले लोगों में से होंगे।

وَأَتْبَعْنَٰهُمْ فِى هَٰذِهِ ٱلدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ هُم مِّنَ ٱلْمَقْبُوحِينَ ﴿42﴾

४३. और उन अगले ज़माने के लोगों को हलाक करने के बाद हम ने मूसा को ऐसी किताब अता की जो लोगों के लिए दलील और हिदायत और रहमत (कृपा) होकर आयी थी ताकि वे नसीहत हासिल कर लें।

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ مِنۢ بَعْدِ مَآ أَهْلَكْنَا ٱلْقُرُونَ ٱلْأُولَىٰ بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿43﴾

४४. और तूर की पश्चिमी दिशा की तरफ़ जब कि हम ने मूसा को हुक्म की वह्यी (प्रकाशना) पहुँचायी थी, न तो तू मौजूद था न तू देखने वालों में से था।

وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ ٱلْغَرْبِىِّ إِذْ قَضَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَى ٱلْأَمْرَ وَمَا كُنتَ مِنَ ٱلشَّٰهِدِينَ ﴿44﴾

---

[1] धरती से मुराद मिस्र की धरती है जहाँ फ़िरऔन राज्य करता था और घमंड का मतलब बिना हक़ के अपने को ऊँचा समझना है, यानी उन के पास कोई सुबूत ऐसा न था जो मूसा की दलीलों और मोजिज़ो का खण्डन (तरदीद) कर सकता, लेकिन घमंड बल्कि दुश्मनी का प्रदर्शन (इज़्हार) करते हुए उन्होंने हठधर्मी और इंकार का रास्ता अपनाया।

وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿45﴾

४५. लेकिन हम ने वहुत सी नसलों को पैदा किया[1] जिन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गयी, और न तू मदयन का रहने वाला था कि उन के सामने हमारी आयतों का पाठ करता, बल्कि हम ही रसूलों को भेजने वाले रहे।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿46﴾

४६. और न तू तूर की तरफ़ था जबकि हम ने आवाज़ दी बल्कि यह तेरे रब की तरफ़ से एक रहमत है, इसलिए कि तू उन लोगों को सतर्क (आगाह) कर दे जिन के पास तुझ से पहले कोई डराने वाला नहीं पहुँचा,[2] क्या ताज्जुब कि वह नसीहत हासिल कर लें।

وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿47﴾

४७. और अगर ये बात न होती कि उन्हें उन के अपने हाथों आगे भेजे हुए कर्मों (आमाल) के सबब कोई तक्लीफ़ पहुँचती तो यह कह उठते कि हे हमारे रब! तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का पालन करते और ईमान वालों में हो जाते।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ۗ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظَاهَرَا ۗ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿48﴾

४८. फिर जब उन के पास हमारी तरफ़ से सच आ पहुँचा, तो कहते हैं कि यह वह क्यों नहीं दिया गया जैसे दिये गये थे मूसा। अच्छा, तो क्या मूसा को इस से पहले जो कुछ दिया गया था उस के साथ लोगों ने कुफ़्र (इंकार) नहीं किया था? (खुलकर) कहा था कि ये दोनों जादूगर हैं, जो एक-दूसरे के मददगार हैं और हम तो उन सब को इंकार करने वाले हैं।

---

[1] قرون (क़ुरून) बहुवचन (जमा) है قرن (कर्न) का, जिसका मतलब है युग (ज़मान)। लेकिन यहाँ नसलों, जमाअतों के मतलब में है, यानी हे मोहम्मद (ﷺ)! आप के और मूसा के बीच जो ज़माना है उस में हम ने कई सम्प्रदाय पैदा किये।

[2] इस से मुराद मक्कावासी और अरब हैं जिनकी तरफ़ नबी ﷺ से पहले कोई नबी नही आया, क्योंकि हज़रत इब्राहीम के बाद नबूवत का सिलसिला इब्राहीम के परिवार ही में रहा और उनका नुज़ूल इस्राईल की औलाद की तरफ़ ही होता रहा। इस्माईल की औलाद यानी अरबों में नबी ﷺ पहले नबी थे और नबूअत के सिलसिले को पूरा करने वाले थे।

قُلْ فَأْتُوا بِكِتَٰبٍ مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَآ أَتَّبِعْهُ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ (49)

४९. कह दीजिए कि अगर सच्चे हो तो तुम भी अल्लाह के पास से कोई ऐसी किताब ले आओ जो इन दोनों से ज़्यादा हिदायत वाली हो, मैं उसी की इत्तेबा करूंगा।

فَإِن لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَٱعْلَمْ أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهْوَآءَهُمْ ۚ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ ٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ (50)

५०. फिर अगर ये तेरी न मानें तो तू यक़ीन कर ले कि यह केवल अपनी इच्छाओं (ख़्वाहिशों) की पैरवी कर रहे हैं और उस से ज़्यादा भटका हुआ कौन है जो अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा हुआ हो बिना अल्लाह की हिदायत के? बेशक अल्लाह तआला ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ ٱلْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ (51)

५१. और हम मुसल्सल लोगों के लिए अपना कलाम (वाणी) भेजते रहे ताकि वे शिक्षा ग्रहण (नसीहत हासिल) कर लें।

ٱلَّذِينَ ءَاتَيْنَٰهُمُ ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلِهِۦ هُم بِهِۦ يُؤْمِنُونَ (52)

५२. जिस को हम ने इस से पहले किताब अता की वह तो इस पर ईमान रखते हैं।[1]

وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوٓا ءَامَنَّا بِهِۦٓ إِنَّهُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّنَآ إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلِهِۦ مُسْلِمِينَ (53)

५३. और जब (उसकी आयतें) उन के सामने पढ़ी जाती हैं तो वे यह कह देते हैं कि इस के हमारे रब की तरफ़ से सच होने पर हमारा ईमान (विश्वास) है, हम तो इस से पहले ही मुसलमान हैं।[2]

---

[1] इस से मुराद वे यहूदी हैं जो मुसलमान हो गये थे, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरह, या वे इसाई हैं जो इथोपिया से नबी ﷺ की सेवा में आये थे और आप के पाक मुँह से क़ुरआन करीम सुन कर मुसलमान हो गये थे। (इब्ने कसीर)

[2] यह उसी हक़ीक़त की तरफ़ इशारा है जिसे क़ुरआन करीम मे कई जगहों पर बयान किया गया है कि हर ज़माने में अल्लाह के पैग़म्बरों ने जिस धर्म का प्रचार (तब्लीग़) किया है, वह इस्लाम ही था और उन नबियों की दावत पर ईमान लाने वाले मुसलमान ही कहलाते थे। यहूदी या इसाई वग़ैरह के कलिमात लोगों के अपने गढ़े हुए हैं जिन की खोज बाद में हुई। इसी बुनियाद पर नबी करीम ﷺ पर ईमान लाने वाले अहले किताब (यहूद या इसाईयों) ने कहा कि हम तो पहले से ही मुसलमान चले आ रहे हैं यानी पहले के नबियों के मानने वाले और उन पर ईमान रखने वाले हैं।

أُولَٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ ﴿54﴾

५४. यह अपने किये हुए सब्र के वदले में दो गुने बदले अता किये जायेंगे, यह नेकी से गुनाह को दूर कर देते हैं और हम ने जो इन्हें दे रखा है उस में से देते रहते हैं।

وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَآ أَعْمَٰلُنَا وَلَكُمْ أَعْمَٰلُكُمْ سَلَٰمٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي الْجَٰهِلِينَ ﴿55﴾

५५. और जब बेकार बात कान में पड़ती है तो उस से अलग हो लेते हैं और कहते हैं कि हमारे अमल हमारे लिए और तुम्हारे अमल तुम्हारे लिए, तुम पर सलाम हो,[1] हम जाहिलों से (उलझना) नहीं चाहते।

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَآءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿56﴾

५६. आप जिसे चाहें हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह तआला ही जिसे चाहे हिदायत देता है। हिदायत पाये लोगों को वही अच्छी तरह जानता है।

وَقَالُوٓا إِن نَّتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ أَرْضِنَآ أَوَلَمْ نُمَكِّن لَّهُمْ حَرَمًا ءَامِنًا يُجْبَىٰٓ إِلَيْهِ ثَمَرَٰتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿57﴾

५७. और कहने लगे कि अगर हम आप के साथ होकर हिदायत के पैरोकार बन जायें तो हम अपने देश से उचक लिये जायें, क्या हम ने उन्हें शान्त और महफ़ूज और शान्ति-सम्मान (हुरमत) वाले 'हरम' में जगह नहीं दिया, जहाँ हर तरह के फल खिंचे चले आते हैं जो हमारे पास से रिज़्क के रूप में हैं?[2] लेकिन उन में से ज़्यादातर कुछ नहीं जानते।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا فَتِلْكَ مَسَٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَن مِّنۢ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا وَكُنَّا نَحْنُ الْوَٰرِثِينَ ﴿58﴾

५८. और हम ने बहुत सी वे वस्तियाँ हलाक कर दीं जो अपनी सुख-सुविधा में इतराने लगी थी। यह हैं उन के निवास स्थान जो उन के बाद बहुत ही कम आबाद किये गये, और हम ही हैं अन्तत: (आख़िरकार) सब कुछ के वारिस।

---

[1] यह सलाम एहतेराम वाला सलाम नहीं है बल्कि पीछा छुड़ाने वाला सलाम है, यानी हम तुम जैसे जाहिल नासमझ इंसानों से बातचीत करने को तैयार ही नहीं, जैसे हिन्दी में कहते हैं, "जाहिलों को दूर से सलाम", वाज़ेह है सलाम से मुराद बातचीत को टालना ही है।

[2] यह मक्का नगर की वह फ़जीलत है जिसका हर साल लाखों हाजी और उमरा करने वाले प्रत्यक्ष दर्शन (मुशाहिदा) करते हैं कि मक्का नगर में पैदावार न होने के बावजूद ज़्यादा तादाद में हर तरह के फल बल्कि दुनिया भर के सामान सुलभ (मुहय्या) होते हैं।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿59﴾

५९. और तेरा रब कसी एक बस्ती को भी उस वक़्त तक हलाक नहीं करता, जब तक कि उन की किसी बड़ी बस्ती में अपना कोई पैग़म्बर न भेज दे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुना दे, और हम बस्तियों को उस वक़्त हलाक करते हैं जब कि वहाँ के रहने वाले ज़ालिम हो जायें।

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿60﴾

६०. और तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह केवल दुनियावी ज़िन्दगी का सामान है और उसकी ज़ीनत (शोभा) है, हाँ, अल्लाह के पास जो है वह सब से अच्छा और बाक़ी रहने वाला है, क्या तुम नहीं समझते?

اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿61﴾

६१. क्या वह इंसान जिसे हम ने अच्छा वादा दिया है जिस को वह निश्चित (यक़ीनी) रूप से पाने वाला है, उस इंसान के बराबर हो सकता है जिसे हम ने दुनियावी ज़िन्दगी के कुछ सुख यूँ ही अता कर दिये, दोबारा आख़िर में वह क़्यामत के दिन (पकड़ा बाँधा) हाज़िर किया जायेगा?

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿62﴾

६२. और जिस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें पुकार कर कहेगा कि तुम जिन्हें अपनी समझ से मेरा साझीदार ठहरा रहे थे कहाँ हैं?

قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ ۡ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿63﴾

६३. जिन पर बात आ चुकी वे जवाब देंगे कि हे हमारे रब! यही वे हैं जिन्हें हम ने बहका रखा था,[1] हम ने उन्हें इसी तरह भटकाया जिस तरह हम भटके थे, हम तेरी सेवा में अपने आप को इन से अलग करते हैं, यह हमारी इबादत नहीं करते थे।

[1] यह उन जाहिल लोगों की तरफ़ इशारा है जिन को कुफ़्र और गुमराही के प्रचारकों और शैतानों ने भटका दिया था।

६४. और कहा जायेगा कि अपने साझीदारों को बुलाओ तो वे बुलायेंगे, लेकिन वे उन्हें जवाब तक नहीं देंगे और सब अज़ाब देख लेंगे, काश ये लोग हिदायत पा लेते !

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ (64)

६५. और उस दिन उन्हें बुलाकर पूछेगा कि तुम ने नबियों को क्या जवाब दिया था?[1]

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ (65)

६६. फिर तो उस दिन उन के सारे समाचार (अख़बार) अंधे हो जायेंगे और एक-दूसरे से सवाल तक न करेंगे।

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ (66)

६७. हाँ, जो इंसान माफ़ी माँग कर ईमान ले आये और नेकी के काम करे, यक़ीन है कि वह कामयाबी हासिल करने वालों में से हो जायेगा।

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ (67)

६८. और आप का रब जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है उन में से चुन लेता है, किसी को कोई हक़ नहीं, अल्लाह के लिए ही पाकी है, वह ऊंचा है हर उस चीज़ से जिसे लोग साझा करते हैं।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ (68)

६९. और आप का रब सब कुछ जानता है जो कुछ वे अपने सीने में छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ (69)

[1] इस से पहले की आयतों (मंत्रों) में तौहीद से सम्बन्धित (मुतअल्लिक़) सवाल था। यह दूसरा एलान रिसालत के बारे में है यानी तुम्हारी तरफ़ हम ने रसूल भेजे थे, तुम ने उन के साथ क्या सुलूक किया, उन की दावत क़ुबूल किया था? जिस तरह क़ब्र में सवाल होता है कि तेरा पैग़म्बर कौन है और तेरा दीन कौन सा है? ईमान वाले तो ठीक जवाब दे देते हैं लेकिन काफ़िर कहता है هَاهْ هَاهْ لَا أَدْرِي (हाय! मुझे तो कुछ मालूम नहीं)। उसी तरह क़यामत के दिन भी उन्हें इस सवाल का जवाब समझ में न आयेगा। इसीलिए आगे फ़रमाया उन पर सभी ख़बरें अंधी हो जायेंगी यानी कोई दलील उनकी समझ में न आयेगी जिसे वे पेश कर सकें, यहां दलीलों को ख़बरों से मुक़ाबला कर के इस तरफ़ इशारा किया गया है कि उनके झूठे ईमान के लिए हक़ीक़त में उन के पास कोई दलील है ही नहीं सिर्फ़ कहानियां और कहावतें हैं, जैसे आज भी क़ब्र पूजकों के पास मनगढ़न्त मोजिज़ों की कहानियों के सिवाय कुछ भी नहीं।

७०. और वही अल्लाह है उस के सिवाय इबादत के लायक़ कोई दूसरा नहीं, दुनिया और आख़िरत में उसी की तारीफ़ है, उसी के लिए हुक्म है और उसी की तरफ़ तुम सब लौटाये जाओगे।

وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿70﴾

७१. कह दीजिए कि देखो तो सही, अगर अल्लाह तआला रात ही रात क़यामत तक मुसल्सल कर दे तो सिवाय अल्लाह के कौन माबूद है जो तुम्हारे पास दिन का प्रकाश (रौशनी) लाये? क्या तुम सुनते नहीं हो?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿71﴾

७२. पूछिये कि यह भी बता दो कि अगर अल्लाह (तआला) तुम पर लगातार क़यामत तक दिन ही दिन रखे तो भी सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई माबूद है जो तुम्हारे पास रात लाये, जिस में तुम आराम कर सको, क्या तुम देख नहीं रहे हो?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿72﴾

७३. और उसी ने तो तुम्हारे लिए अपनी रहमत और मेहरबानी (दया) से दिन-रात मुक़र्रर कर दिये हैं कि रात को तुम आराम कर सको और दिन में उस की (भेजी हुई) रोज़ी की खोज करो।[1] यह इसलिए कि तुम शुक्रिया अदा करो।

وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿73﴾

७४. और जिस दिन उन्हें पुकार कर अल्लाह (तआला) कहेगा कि जिन्हें तुम मेरा साझीदार समझते थे वे कहाँ हैं?

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿74﴾

---

[1] दिन और रात, यह दोनों अल्लाह के बहुत बड़े वरदान (इंआम) से हैं, रात को अंधेरी बनाकर लोगों के लिए आराम का वक़्त अता किया, इस अंधेरे की वजह सारी सृष्टि (मख़लूक़) सोने और आराम करने के लिए मजबूर है, वर्ना अगर आराम करने और सोने के अपने-अपने वक़्त होते तो कोई भी पूरी तरह से सोने का मौक़ा न पाता, जबकि कारोबार और व्यवपार (तिजारत) को अच्छे ढंग से चलाने के लिए नींद का पूरा होना बहुत ज़रूरी है, इस के बिना चुस्ती हासिल नहीं होती।

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿75﴾

७५. और हम हर उम्मत से एक गवाह अलग कर लेंगे[1] और कह देंगे कि अपनी दलील पेश करो, तो उस वक़्त जान लेंगे कि सच अल्लाह की तरफ़ है और जो कुछ झूठ वे गढ़ रहे थे सब उन के पास से खो जायेंगे।

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿76﴾

७६. क़ारून था तो मूसा की क़ौम से, लेकिन उन पर ज़ुल्म करने लगा था, हम ने उसे इतना ज़्यादा ख़ज़ाना दे रखा था कि कई-कई शक्तिशाली लोग कठिनाई से उसकी चाभियाँ उठा सकते थे। एक बार उस की क़ौम ने उस से कहा कि इतरा मत, अल्लाह (तआला) इतराने वालों से मुहब्बत नहीं करता।

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ ۖ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا ۖ وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿77﴾

७७. और जो कुछ अल्लाह (तआला) ने तुझे अता कर रखा है उस में से आख़िरत के घर की खोज भी रख और अपने दुनियावी हिस्से को भी न भूल, और जैसाकि अल्लाह ने तेरे ऊपर एहसान किया है तू भी अच्छा सुलूक कर और देश में फ़साद की इच्छा न कर, यक़ीन कर कि अल्लाह तआला फ़सादियों से मुहब्बत नहीं रखता है।

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۚ وَلَا يُسْأَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿78﴾

७८. क़ारून ने कहा कि यह सब कुछ मुझे मेरे अपने इल्म के सबब दिया गया है, क्या अब तक उसे यह नहीं मालूम हुआ कि अल्लाह (तआला) ने उस से पहले बहुत सी बस्ती वालों को हलाक कर दिया, जो उस से ज़्यादा शक्तिशाली और ज़्यादा धनवान थे,[2] और

---

[1] इस गवाह से मुराद पैग़म्बर हैं, यानी हर उम्मत के पैग़म्बर को उस उम्मत से अलग खड़ा कर देंगे।

[2] यानी क़ूवत और माल की ज़्यादती यह फ़ज़ीलत का सबब नहीं, अगर ऐसा होता तो पहले के लोग हलाक (नष्ट) न होते। इसलिए क़ारून का अपने धन पर घमण्ड करने और उसे अपनी फ़ज़ीलत का सबब बताने का कोई औचित्य (जवाज़) नहीं।

मुजरिमों से उन के गुनाहों की पूछताछ ऐसे वक़्त नहीं की जाती ।[1]

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِىْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَاۤ اُوْتِىَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿79﴾

७९. इसलिए (क़ारून) पूरी ज़ीनत के साथ अपनी क़ौम के जमघट में निकला,[2] तो दुनियावी ज़िन्दगी के मतवालों ने कहा कि काश हमें किसी तरह वह मिल जाता जो क़ारून को दिया गया है, यह तो बड़ा ही नसीब वाला है ।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰهَاۤ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿80﴾

८०. और आलिम लोग उन्हें समझाने लगे कि अफ़सोस की बात है, अच्छी चीज़ तो वह है जो नेकी के रूप में उन्हें मिलेगी जो अल्लाह पर ईमान लायें और नेकी के काम करें ।[3] यह बात उन्ही के दिल में डाली जाती है जो धैर्यवान (सब्र करने वाले) और सहनशील (बर्दाश्त करने वाले) हों ।

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۗ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿81﴾

८१. (आख़िरकार) हम ने उसे उस के महल के साथ धरती में धंसा दिया, और अल्लाह के सिवाय कोई गिरोह उसकी मदद के लिए तैयार नहीं हुआ न वह ख़ुद अपने को बचाने वालो में से हो सका ।

[1] यानी जब गुनाह इतनी ज़्यादा तादाद में हो कि उन के सबब वह अज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाये तो उन से पूछताछ नहीं की जाती बस अचानक उनको पकड़ लिया जाता है ।

[2] ये कहने वाले कौन थे? कुछ के निकट ईमानवाले ही थे जो उस के धन और शान-शौकत के प्रदर्शन (इज़हार) से प्रभावित हो गये थे और कुछ के क़रीब काफ़िर थे ।

[3] यानी जिन के पास दीन का इल्म था और दुनिया और उस के प्रदर्शन (इज़हार) की असल हक़ीक़त जानते थे, उन्होंने कहा कि यह क्या है, कुछ भी नहीं । अल्लाह ने ईमानवालों और परहेज़गारों के लिए जो बदला और नेकी रखी है, वह इस से कहीं ज़्यादा अच्छा है । जैसे हदीस क़ुदसी में है, अल्लाह तआला फ़रमाता है : "मैंने अपने परहेज़गार बन्दों के लिए ऐसी-ऐसी चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिन्हें किसी आँख ने नहीं देखा, किसी कान ने नहीं सुना और न किसी के ख़्याल में आया ।" (अल-बुख़ारी, किताबुत तौहीद, मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अदना अहलिल जन्नः मंज़िलतन)

وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيْكَأَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا وَيْكَأَنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿82﴾

८२. और जो लोग कल तक उस के पद तक पहुँचने की उम्मीद कर रहे थे, वे आज कहने लगे कि क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) ही अपने बंदों में से जिस के लिए चाहे रोज़ी ज़्यादा कर देता है और कम भी, अगर अल्लाह (तआला) हम पर एहसान न करता तो हमें भी धंसा देता, क्या देखते नहीं हो कि नाशुक्रों को कभी कामयाबी नहीं हासिल होती।

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿83﴾

८३. आख़िरत का यह (भला) घर हम उन्हीं के लिए मुक़र्रर कर देते है जो धरती पर घमन्ड और ग़रूर नहीं करते, न फ़साद की तमन्ना रखते हैं, और परहेज़गारों (संयमियों) के लिए बहुत अच्छा बदला है।

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿84﴾

८४. जो इंसान नेकी लायेगा उसे उस से बेहतर मिलेगा और जो बुराई लेकर आयेगा तो ऐसे पाप करने वालों को उन के उसी अमल का बदला अता किया जायेगा जो वे करते थे।[1]

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿85﴾

८५. जिस (अल्लाह) ने आप पर क़ुरआन नाज़िल किया है वह आप को दोबारा पहली जगह पर लाने वाला है। कह दीजिए कि मेरा रब उसे भी अच्छी तरह जानता है जो हिदायत पाये हैं और उसे भी जो खुले भटकावे में है।

وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِلْكَافِرِينَ ﴿86﴾

८६. और आप ने तो कभी यह सोचा भी न था कि आप की तरफ़ किताब नाज़िल की जायेगी, लेकिन यह आप के रब की रहमत से (नाज़िल हुआ)। अब आप को कभी काफ़िरों का सहायक (मददगार) न होना चाहिए।

---

[1] यानी भलाई का बदला तो बढ़ा-चढ़ाकर दिया जायेगा लेकिन बुराई का बदला बुराई के बराबर ही मिलेगा, यानी भलाई के बदले में अल्लाह की रहमत और नेमत का और बुराई के बदले मे उस के इंसाफ़ का प्रदर्शन (इज़हार) होगा।

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾

८७. (ध्यान रहे कि) ये काफिर आप को अल्लाह तआला की आयतों के प्रचार (तबलीग़) करने से रोक न दें, उस के बाद कि यह आप की तरफ नाज़िल की गयीं, तो अपने रब की तरफ़ बुलाते रहें और शिर्क करने वालों (मुश्रिकों) में से न हों।

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ۗ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

८८. और अल्लाह (तआला) के साथ किसी दूसरे माबूद को न पुकारना,[1] सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई दूसरा इबादत के लायक़ नहीं, हर चीज़ फ़ना होने वाली है, लेकिन उसी का मुँह[2] उसी का शासन है और तुम उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

सूरतुल अनकबूत-२९

سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ

सूरः अनकबूत मक्का में नाज़िल हुई और इस की उनहत्तर आयतें और सात रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الٓمٓ ﴿١﴾

१. अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

---

[1] यानी किसी दूसरे की इबादत न करना, न दुआ के ज़रिये, न भोग-प्रसाद (नज़र) से, न क़ुर्बानी के ज़रिये, कि ये सभी इबादतें हैं, जो केवल एक अल्लाह के लिए ख़ास हैं। क़ुरआन करीम में कई जगहों पर अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे की इबादत को पुकारना कहा गया है, जिसका मक़सद इसी बिन्दु को वाज़ेह करना है कि अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को माध्यमों (असबाब) से परे मानकर पुकारना, उन से मदद माँगना, विनय (फ़रियाद) और दुआयें करना यह उनकी इबादत ही है जिस से इंसान मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) बन जाता है।

[2] وَجْهه (उसका मुँह) से मुराद अल्लाह की ज़ात है, अंश बोल कर कुल मुराद है यानी अल्लाह के सिवाय हर चीज़ ख़त्म हो जाने वाली है।

﴿كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ﴾

"धरती पर जो हैं सब ख़त्म होने वाले है, सिर्फ़ तेरे रब का मुँह जो महानता (अज़मत) और सम्मान (इकराम) वाला है, बाक़ी रह जायेगा।" (सूरः अर्रहमान-२६, २७)

أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ﴿2﴾

२. क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि उन के केवल इस क़ौल पर कि हम ईमान लाये हैं वे बिना इम्तेहान लिये हुए ही छोड़ दिये जायेंगे?[1]

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ﴿3﴾

३. उन से पहले के लोगों को भी हम ने अच्छी तरह जाँचा, बेशक अल्लाह (तआला) उन्हें भी जान लेगा जो सच कहते हैं और उन्हें भी जान लेगा जो झूठे हैं।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَسْبِقُونَا ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿4﴾

४. क्या जो लोग बुरे काम कर रहे हैं, उन्होंने यह समझ रखा है कि वे हमारे क़ाबू से बाहर हो जायेंगे? यह लोग कैसा बुरा ख़्याल कर रहे हैं।

مَنْ كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿5﴾

५. जिसे अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो तो अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त ज़रूर आने वाला है,[2] वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।

وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿6﴾

६. और हर कोशिश करने वाला अपने ही भले के लिए कोशिश करता है। बेशक अल्लाह (तआला) सभी दुनिया वालों से बेनियाज़ है।[3]

---

[1] **सूर: अल-अनकबूत की तफ़सीर** : यानी यह ख़्याल कि सिर्फ़ मुँह से ईमान ले आने के बाद बिना इम्तेहान लिए उन्हें छोड़ दिया जायेगा सही नहीं, बल्कि उन्हें जान और माल के दुख और दूसरी परीक्षाओं के ज़रिये जाँचा परखा जायेगा ताकि खरे खोटे का, झूठ-सच का, ईमानवाले और मुनाफ़िक़ का पता चल जाये।

[2] यानी जिसे आख़िरत पर यक़ीन है और वह बदले और नेकी की उम्मीद से नेक काम करता है अल्लाह तआला उसकी उम्मीदें पूरी करेगा और उसे उस के अमल का पूरा बदला अता करेगा, क्योंकि क़यामत यक़ीनी तौर से होकर रहेगी और अल्लाह की अदालत का क़याम (स्थापना) ज़रूर होगा।

[3] इसका मतलब वही है जो ﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ﴾ (सूर: जासिया :१५) का है, यानी 'जो नेक काम करेगा उसका फ़ायेदा उसी को होगा,' वरन् अल्लाह तआला को तो बंदों के अमल की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर सारी धरती के लोग अल्लाह से डर खाने वाले (परहेज़गार) हो जायें तो उस के राज्य में शक्ति (ज़्यादती) और विस्तार (इज़ाफ़ा) न होगा और सभी नाफ़रमानी करने वाले हो जायें तो उस के राज्य में तनिक भी कमी नहीं आयेगी। लफ़्ज़ों के बिना पर इन में

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿7﴾

७. और जिन लोगों ने यक़ीन किया और (सुन्नत के ऐतबार से) अच्छे अमल किये, हम उन के सभी गुनाहों को उन से दूर कर देंगे और उन की नेकी का अच्छा बदला देंगे।

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۖ وَإِن جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿8﴾

८. हम ने हर इंसान को अपने माता-पिता से अच्छा सुलूक करने की शिक्षा (तालीम) दी है[1] लेकिन अगर वे यह कोशिश करें कि तुम मेरे साथ उसे शामिल कर लो जिस का तुम को इल्म नहीं तो उनका कहना न मानो[2] तुम सब को लौटकर मेरी ही ओर आना है, फिर मैं हर उस बात से जो तुम करते थे, तुम्हें आगाह (अवगत) कराऊँगा।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ﴿9﴾

९. और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और नेकी के काम किये, उन्हें हम अपने नेक बंदों में शामिल कर लेंगे।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ ۖ وَلَئِن جَاءَ نَصْرٌ مِّن رَّبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۚ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ﴿10﴾

१०. और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो (मुँह से) कहते हैं कि हम ईमान लाये हैं लेकिन जब अल्लाह के रास्ते में कोई दुख आ पड़ता है तो लोगों के कष्ट देने को अल्लाह तआला के अज़ाब के समान बना लेते हैं, लेकिन अगर अल्लाह की मदद आ जाये तो पुकार उठते हैं कि हम तो तुम्हारे साथी ही हैं, क्या सभी संसार (इंसानों) के दिलों में जो कुछ है उसे अल्लाह तआला जानता नहीं है?

काफ़िरों से जिहाद करने का भी हुक्म शामिल है कि वह भी एक तरह का नेक काम ही है।

[1] क़ुरआन करीम के कई जगहों पर अल्लाह तआला ने अपनी एकता और इबादत का हुक्म देने के साथ ही साथ माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने पर ज़ोर दिया है, जिस से इस बात की वज़ाहत होती है कि एकेश्वरवाद (तौहीद) की माँगों को सही तरीक़े से वही समझ सकता और उन्हें निभा सकता है जो माता-पिता के हुक्म की पैरवी और सेवा (ख़िदमत) की माँगों को समझता है और निभाता है।

[2] यानी माता-पिता अगर शिर्क का हुक्म दें (और उसी में दूसरे गुनाहों का हुक्म भी शामिल है) और उस के लिए ख़ास कोशिश भी करें तो उनकी इताअत नहीं करनी चाहिए।

وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿11﴾

११. और जो लोग ईमान लाये अल्लाह उन्हें भी जानकर (जाहिर कर के) रहेगा और मुनाफ़िकों को भी जानकर (जाहिर कर के) रहेगा ।[1]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿12﴾

१२. और काफ़िरों ने ईमानवालों से कहा कि तुम हमारे रास्ते की इत्तेबा करो तुम्हारे गुनाह हम उठा लेंगे, जबकि वह उन के गुनाहों में से कुछ भी नहीं उठाने वाले, यह तो केवल झूठे हैं।

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿13﴾

१३. हाँ, ये अपने बोझ ढो लेंगे और अपने बोझों के साथ दूसरे बोझ भी[2] और जो कुछ झूठ गढ़ रहे हैं उन सब के लिए उन से पूछताछ होगी ।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿14﴾

१४. और हम ने नूह (عليه السلام) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा, वे उन के बीच साढ़े नौ सौ साल तक रहे, फिर तो उन्हें तूफ़ान ने धर पकड़ा और वे थे भी ज़ालिम ।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَاۤ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿15﴾

१५. फिर हम ने उन्हें और नाव वालों को मुक्ति (नजात) दी और हम ने इस वाक़िआ को पूरी दुनिया के लिये शिक्षा की निशानी बना दिया ।

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿16﴾

१६. और इब्राहीम (عليه السلام) ने भी अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह (तआला) की इबादत करो और उस से डरते रहो, अगर तुम में अक़्ल है तो यही तुम्हारे लिए बेहतर है ।

[1] इसका मतलब है कि अल्लाह तआला सुख और दुख देकर इम्तेहान लेगा ताकि मुनाफ़िकों और ईमानवालों में फ़र्क वाज़ेह हो जाये, जो दोनों हालतों में अल्लाह के हुक्म की पैरवी करेगा वह ईमान वाला है और जो केवल ख़ुशी और सुख में आज्ञापालन करेगा तो इसका मतलब यह है कि वह केवल अपने मतलब को पूरा करने का ताबे है, अल्लाह का नहीं ।

[2] यानी यह कुफ़्र के अगुवा और बेदीन के प्रचारक अपना ही बोझ नहीं उठायेंगे, बल्कि उन लोगों के गुनाहों का बोझ भी उन पर होगा जो उनकी कोशिशों की वजह से गुमराह हुए थे । यह विषय सूर: अन-नहल : २५ में भी गुज़र चुका है ।

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِندَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿17﴾

१७. तुम तो अल्लाह तआला के सिवाय मूर्तियों की पूजा कर रहे हो और झूठी बातें मन से गढ़ लेते हो। (सुनो!) जिन-जिन की तुम अल्लाह (तआला) के सिवाय पूजा-पाठ कर रहे हो, वे तो तुम्हारे रिज़्क़ के मालिक नहीं, इसलिए तुम्हें चाहिए कि अल्लाह तआला से ही रोज़ी माँगो और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्रिया अदा करो, और उसी की तरफ़ तुम लौटाये जाओगे।

وَإِن تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿18﴾

१८. और अगर तुम झुठलाओ तो तुम से पहले के लोगों ने भी झुठलाया है,[1] और रसूल का कर्तव्य (फ़र्ज़) तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ प्रकार से पहुँचा देना ही है।

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿19﴾

१९. क्या उन्होंने नहीं देखा कि मख़लूक़ की पैदाईश किस तरह अल्लाह ने की फिर अल्लाह उस को लौटायेगा, यह तो अल्लाह के लिए बहुत आसान है।

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ۚ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿20﴾

२०. कह दीजिए कि धरती पर चल-फिर कर देखो तो[2] कि किस तरह से अल्लाह (तआला) ने सब से पहले मख़लूक़ की पैदाईश की फिर अल्लाह तआला ही दूसरी नई पैदाईश करेगा। अल्लाह तआला हर चीज़ पर सामर्थ्य (क़ुदरत) रखने वाला है।

---

[1] यह हज़रत इब्राहीम ﷺ का भी क़ौल हो सकता है, जो उन्होंने अपने समुदाय (क़ौम) से कहा था या अल्लाह तआला का क़ौल है, जिस में मक्कावासियों को सम्बोधन (ख़िताब) है और इस में नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि अगर मक्का के काफ़िर आप ﷺ को झुठला रहे हैं तो इससे घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है, पैग़म्बरों के साथ यही होता चला आया है। पहले की उम्मतें भी रसूल को झुठलाते और उसका नतीजा भी हलाकत और बर्बादी के रूप में भुगतते रहे हैं।

[2] यानी दुनिया में फैली हुई अल्लाह की निशानियाँ देखो धरती पर ध्यान दो, किस तरह उसे बिछाया, उस में पर्वत, घाटियाँ, नदियाँ और समुद्र बनाये। उसी से कई तरह की रोज़ी व फल पैदा किये, क्या यह सब चीज़ें इस बात का सुबूत नहीं है कि उन्हें पैदा किया गया है और उन का कोई बनाने वाला है?

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿21﴾

२१. जिसे चाहे अज़ाब दे, और जिस पर चाहे रहम करे, सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿22﴾

२२. तुम न तो धरती पर अल्लाह (तआला) को मजबूर कर सकते हो न आकाश में, अल्लाह (तआला) के सिवाय तुम्हारा कोई संरक्षक (वली) है न सहयोगी (मददगार)।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖۤ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿23﴾

२३. और जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों और उसकी मुलाकात को झुठलाते हैं, वे मेरी रहमत से निराश हो जायें[1] और उन के लिए दुखदायी अज़ाब है।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿24﴾

२४. उन की क़ौम का जवाब इस के सिवाय कुछ न था कि कहने लगे कि इसे मार डालो या इसे जला दो। आख़िरकार अल्लाह (तआला) ने उन्हें आग से बचा लिया, इस में ईमानवालों के लिए तो बहुत-सी निशानियाँ हैं।

وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۡ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿25﴾

२५. (हज़रत इब्राहीम ﷺ ने) कहा कि तुम ने जिन मूर्तियों (देवताओं) की पूजा अल्लाह के सिवाय की है, उन्हें तुम ने अपनी दुनियावी दोस्ती का सबब बना लिया है, तुम सब क़यामत के दिन एक-दूसरे से इंकार करने लगोगे और एक-दूसरे को धिक्कारने लगोगे, और तुम सबका ठिकाना नरक में होगा और तुम्हारी कोई मदद करने वाला न होगा।

---

[1] अल्लाह तआला की रहमत (दया) दुनिया में आम लोगों के लिए है, जिस से काफ़िर और ईमानवाले, छली और मक्कार, अच्छे और बुरे सभी आम तौर से फ़ायेदा उठा रहे हैं। अल्लाह तआला सभी को दुनिया के सुख और धन-धान्य अता कर रहा है, यह अल्लाह तआला की रहमत की वह तफ़सील है जिसे अल्लाह तआला ने दूसरी जगह पर फ़रमाया :

﴿وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ﴾

"मेरी रहमत ने हर चीज़ को घेर लिया है।" (सूर: अल-आराफ़-१५६)

लेकिन आख़िरत चूँकि बदला देने की जगह है, इसलिए वहाँ मुआमला दूसरा होगा।

फ़आम-न लहू लूतुन, व क़ा-ल इन्नी मुहाजिरुन इला रब्बी, इन्नहू हुवल अज़ीज़ुल हकीम (26)

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّیْ مُهَاجِرٌ اِلٰی رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ (26)

२६. तो उस (हजरत इब्राहीम ﷺ पर) (हजरत) लूत (ﷺ) ईमान लाये[1] और कहने लगे कि मैं अपने रब की तरफ हिजरत करने वाला हूँ, वह बड़ा ग़ालिब (प्रभावशाली) और हिक्मत वाला है।

وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِیْ ذُرِّیَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَیْنٰهُ اَجْرَهٗ فِی الدُّنْیَا ۚ وَاِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ (27)

२७. और हम ने उसे (इब्राहीम को) इसहाक़ और याक़ूब अता किये और हम ने नबूअत और किताब उनकी औलाद में ही कर दी[2] और हम ने दुनिया में भी उसे अच्छा बदला दिया, और आख़िरत में तो वह परहेज़गारों में से हैं।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۫ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ (28)

२८. और (हज़रत) लूत (ﷺ) की भी (चर्चा करो) जब कि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम तो उस बेहयाई पर उतर आये हो[3] जिसे तुम से पहले पूरी दुनिया में से किसी ने भी नहीं किया।

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِیْلَ ۙ۬ وَتَاْتُوْنَ فِیْ نَادِیْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ (29)

२९. क्या तुम मर्दों के पास (कुकर्म के लिए) आते हो और रास्ता बन्द करते हो और अपनी आम सभाओं (मजलिसों) में बेशर्मी का काम करते हो? तो उस के जवाब में उस की क़ौम ने इस के सिवाय कुछ नहीं कहा कि बस जा, अगर सच्चा है तो हमारे पास अल्लाह का अज़ाब ले आ।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ عَلَی الْقَوْمِ الْمُفْسِدِیْنَ (30)

३०. (हज़रत) लूत (ﷺ) ने दुआ की कि रब!

---

[1] हज़रत लूत, हज़रत इब्राहीम ﷺ के भाई के बेटे थे, यह हज़रत इब्राहीम पर ईमान लाये, उस के बाद उन को भी 'सदूम' के इलाक़े में नबी बनाकर भेजा गया।

[2] यानी हज़रत इसहाक़ से याक़ूब हुए, जिन से इस्राईल की औलाद का वंश चला और उन्हीं में सारे नबी हुए और किताबें आयीं। आख़िर में हज़रत नबी करीम ﷺ हज़रत इब्राहीम के दूसरे (बड़े) पुत्र हज़रत इस्माईल के वंश में नबी हुए और आप ﷺ पर क़ुरआन नाज़िल हुआ।

[3] उस कुकर्म (बेहयाई) से मुराद वही मर्द से लिवात (सम्मिलन) है जिसको लूत की क़ौम वालों ने सब से पहले किया, जैसाकि क़ुरआन ने वाज़ेह किया है।

इस फ़सादी क़ौम पर मेरी मदद कर।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرٰهِيمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظٰلِمِينَ ﴿31﴾

३१. और जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते (हज़रत) इब्राहीम (ﷺ) के पास ख़ुशख़बरी लेकर पहुँचे, कहने लगे कि हम इस बस्ती वालों को नाश करने वाले हैं।[1] बेशक यहाँ के निवासी ज़ालिम हैं।

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿32﴾

३२. (हज़रत इब्राहीम ने) कहा कि उस में तो लूत (ﷺ) हैं, फ़रिश्तों ने कहा कि यहाँ जो हैं हम उन्हें अच्छी तरह जानते हैं, लूत और उस के परिवार को सिवाय उसकी बीवी के हम बचा लेंगे, बेशक वह औरत पीछे रह जाने वालों में से है।

وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنَجُّوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿33﴾

३३. और फिर जब हमारे भेजे हुए लूत (ﷺ) के पास पहुँचे तो वह उन के सबब दुखी हुए और दिल में ग़म करने लगे। संदेशवाहकों ने कहा कि आप डरें नहीं न दुखी हों, हम आप को आप के परिवार सहित महफ़ूज़ कर लेंगे, सिवाय आप की बीवी कि वह अज़ाब के लिए बाक़ी रह जाने वालों में से होगी।

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلٰى أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿34﴾

३४. हम इस बस्ती वालों पर आसमानी अज़ाब ढाने वाले हैं[2] इस वजह से कि ये फ़ासिक़ हो रहे हैं।

---

[1] यानी हज़रत लूत की दुआ क़ुबूल हुई और अल्लाह ने फ़रिश्तों को हलाक करने के लिए भेज दिया, वे फ़रिश्ते पहले हज़रत इब्राहीम ﷺ के पास गये और उन्हें इसहाक़ ﷺ और याक़ूब ﷺ की ख़ुशख़बरी दी और साथ ही बताया कि हम लूत ﷺ की बस्ती को नाश करने आये हैं।

[2] इस आसमानी अज़ाब से मुराद वही अज़ाब है जिस के ज़रिये लूत की क़ौम को धंसा दिया गया। कहा जाता है कि जिब्रील ﷺ उन की बस्तियों को धरती से उखाड़कर आकाश की ऊँचाई तक ले गये फिर उनको उन ही पर उलटा दिया गया, उस के बाद कंकड़-पत्थर की वर्षा की गयी और उस जगह को बहुत बदबूदार झील में बदल दिया गया। (इब्ने कसीर)

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿35﴾

३५. और हम ने इस बस्ती को खुली शिक्षा ग्रहण (हासिल) करने के लिए निशानी (लक्षण) बना दिया, उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं।

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿36﴾

३६. और मदयन की[1] तरफ़ (हम ने) उन के भाई शुऐब (ﷺ) को (भेजा) उन्होंने कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, क़यामत के दिन की उम्मीद रखो और धरती में फ़साद न फैलाते फिरो।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿37﴾

३७. फिर भी उन्होंने उन्हें झुठलाया, आख़िर में उन्हें ज़लज़ला ने पकड़ लिया और वे अपने घरों में बैठे के बैठे मुर्दा होकर रह गये।

وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۗ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿38﴾

३८. और हम ने 'आद वालों' और 'समूद वालों' को भी (हलाक किया) जिन के कुछ खण्डहर तुम्हारे सामने मौजूद हैं[2] और शैतान ने उन के बुरे काम को सुसज्जित (मुज़य्यन) करके दिखाया था और उन्हें रास्ते से रोक दिया था, इस के बावजूद कि यह आँखों वाले और चालाक थे।

وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۗ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ﴿39﴾

३९. और क़ारून, फ़िरऔन और हामान को भी, उन के पास (हज़रत) मूसा खुले-खुले मोजिज़े लेकर आये थे, फिर भी उन्होंने धरती पर घमण्ड किया, लेकिन हम से आगे बढ़ने वाले न हो सके।

---

[1] मदयन हज़रत इब्राहीम ﷺ के बेटे का नाम था, कुछ के क़रीब यह उन के पोते का नाम है, बेटे का नाम मदयान था, उन ही के नाम पर उस क़बीले (गोत्र) का नाम पड़ गया, जो उन ही के वंश पर शामिल था। इसी मदयन क़बीले की तरफ़ हज़रत शुऐब ﷺ को नबी बनाकर भेजा गया। कुछ कहते हैं कि मदयन नगर का नाम था यह क़बीला या नगर लूत ﷺ की बस्ती के क़रीब ही था।

[2] आद की क़ौम की बस्ती अहक़ाफ़, हद्रमूत (यमन के लाल सागर का तटीय भाग) के क़रीब और समूद की बस्ती हिज्र जिसे आजकल मदायन स्वालेह कहते हैं, हिजाज़ के उत्तर में है। इन इलाक़ों से अरबों की व्यवपारिक यात्रायें (तिजारती सफ़र) हुआ करती थीं, इसलिए ये बस्तियाँ उन के लिए अंजान नहीं बल्कि जानती थीं।

فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿40﴾

४०. फिर तो हम ने हर एक को उस के पाप की सज़ा में धर लिया, उन में से कुछ पर हम ने पत्थरों की बारिश की[1] उन में से कुछ को तेज़ चीख़ ने दबोच लिया,[2] उन में से कुछ को हम ने धरती में धंसा दिया[3] और उन में से कुछ को हम ने पानी में डुबो दिया[4] अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि उन पर ज़ुल्म करे बल्कि वही लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۚ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿41﴾

४१. जिन लोगों ने अल्लाह (तआला) के सिवाय दूसरे को वली (देवता) मुक़र्रर कर रखा है, उन की मिसाल (उदाहरण) मकड़ी की तरह है कि वह भी एक घर बनाती है, अगरचे (यद्यपि) सभी घरों से ज़्यादा कमज़ोर घर मकड़ी का घर ही है,[5] काश, कि वे जान लेते।

---

[1] यह आद की क़ौम थी, जिस पर तेज़ चीख़ और हवाओं का अज़ाब आया, ये हवायें धरती से कंकरियाँ उड़ाकर उन पर बरसातीं, आख़िर में उन की तेज़ी इतनी बढ़ी कि उन्हें उड़ाकर आकाश तक ले जातीं और उन्हें सिर के बल दे मारतीं, जिस से उन के सिर अलग और धड़ अलग हो जाते जैसेकि वे खजूर के खोखले तने हैं। (इब्ने कसीर)

[2] यह हज़रत स्वालेह की क़ौम समूद है, जिन्हें उन के कहने पर पत्थर की एक चट्टान से ऊँटनी निकाल कर दिखायी गयी, लेकिन उन ज़ालिमों ने ईमान लाने के बजाये उस ऊँटनी को ही मार डाला, जिस के तीन दिन के बाद उन पर तेज़ चीख़ का अज़ाब आया, जिस ने उन की आवाज़ और चाल को शान्त (ख़ामोश) कर दिया।

[3] यह क़ारून है, जिसे दौलत के ख़ज़ाने अता किये गये थे, लेकिन यह इस घमंड में मगन हो गया कि वह धन-धान्य इस बात का सुबूत है कि मैं अल्लाह के यहाँ सम्मानित (बाइज़्ज़त) और आदरणीय (मुअज़्ज़िज़) हूँ, मुझे मूसा की बात को क़ुबूल करने की क्या ज़रूरत है? इसलिए उसे उस के ख़ज़ानों और महलों सहित धरती में धंसा दिया गया।

[4] यह फ़िरऔन है जो मिस्र देश का राजा था, लेकिन हद से तजावुज़ करके अपने आप को भगवान (उपास्य) एलान कर दिया, हज़रत मूसा पर ईमान लाने से और उन की क़ौम इस्राईल की औलाद को, जिसको उसने ग़ुलाम बना रखा था, आज़ाद करने से इंकार कर दिया, आख़िर में एक सुबह उस को उस की पूरी सेना सहित लाल सागर (क़ुल्ज़ुम) में डुबो दिया गया।

[5] यानी जिस तरह मकड़ी का जाला (घर) बहुत कमज़ोर और अस्थाई (आरज़ी) होता है, हाथ के ज़रा से इशारे से वह नष्ट हो जाता है, अल्लाह के सिवाय दूसरों को अपना वली और मददगार समझना भी बिल्कुल उसी की तरह है, यानी कमज़ोर और बेकार है, क्योंकि वे भी किसी के काम नहीं आ सकते, इसलिए अल्लाह के सिवाय दूसरों के सहारे भी मकड़ी के जाले के समान कमज़ोर और बेकार हैं, अगर यह मज़बूत और फ़ायदेमंद होते तो यह देवता पहले की उम्मतों

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿42﴾

४२. अल्लाह (तआला) उन सभी चीजों को जानता है जिन्हें वह उस के सिवाय पुकार रहे हैं, और वह बड़ा जबरदस्त और हकीम है।

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿43﴾

४३. और हम इन मिसालों को लोगों के लिए बयान कर रहे हैं, और इन्हें केवल इल्म वाले ही समझते हैं।[1]

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿44﴾

४४. अल्लाह तआला ने आकाशों और धरती को हक़ और सच के साथ पैदा किया है, ईमान वालों के लिए तो इसमें बड़ी भारी निशानी है।

اتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ ۗ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿45﴾

४५. जो किताब आप की तरफ़ वह्यी की गयी है उसे पढ़िये[2] और नमाज क़ायम कीजिए (पाबन्दी से पढ़िये)[3] बेशक नमाज बेहयाई और बुराई से रोकती है[4] और बेशक अल्लाह का जिक्र बहुत बड़ी बात है। तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह (तआला) जानता है।

को बचा लेते लेकिन दुनिया ने देख लिया कि वे उन्हें नहीं बचा सके।

[1] इस इल्म से मुराद अल्लाह को, उस के धार्मिक विधानों (शरीअतों) का और उन आयतों और दलीलों का इल्म है जिन पर ख्याल और सोच-फ़िक्र करने से इंसान को अल्लाह का इल्म हासिल होता है और हिदायत का रास्ता प्रशस्त (वाजेह) होता है।

[2] क़ुरआन करीम की तिलावत के कई मक़सद हैं, सिर्फ़ बदला और नेकी के लिए, उस के माने और मतलब पर ख्याल और फ़िक्र के लिए, शिक्षा-दीक्षा (तालीम) के लिए और तफ़सीर के लिए, तिलावत के हुक्म में ये सभी क़िस्में शामिल हैं।

[3] क्योंकि नमाज से (अगर नमाज हो) इंसान का ख़ास तौर से सम्बन्ध अल्लाह से हो जाता है, जिस से इंसान को अल्लाह तआला की मदद हासिल होती है, जो जिन्दगी के हर मोड़ पर उसकी मजबूती और स्थिरता (पायेदारी) का सबब और हिदायत का जरिया साबित होती है।

[4] यानी बेहयाई और बुराई को रोकने का जरिया बनती है, जिस तरह दवाओं के कई असर हैं, और कहा जाता है कि फ़लाँ दवाई फ़लाँ रोग को रोकती है और हक़ीक़त में ऐसा होता है, लेकिन कब? जब दो बातों को ध्यान में रखा जाये, एक तो दवाई को तरीक़े से उस नियम और शर्त के साथ इस्तेमाल किया जाये, जो वैद्य, हकीम या डाक्टर ने बताया है। दूसरा परहेज यानी ऐसी चीजों का इस्तेमाल न किया जाये जो उस दवा के असर को कम करे या ख़त्म कर दे। इसी तरह नमाज में भी अल्लाह तआला ने ऐसा असर रखा है कि यह इंसान को बेहयाई और बुराई से रोकती है, लेकिन उसी समय जब नमाज सुन्नते नबवी ﷺ के अनुसार उन तरीक़ों और शर्तों के साथ पढ़ी जाये जो उसकी क़ुबूलियत और मान्यता (सिहत) के लिए फ़र्ज हैं।